महाभारत ने अर्जुन की उग्र तपस्या

मोढवाडिया भीनीबेन अरजनभाई
श्री एसएम जाडेजा कोलेज, कुतियाणा

महाभारत विश्व का सबसे बडा दार्शनिक ग्रंथ माना जाता है । इसमे लगभग एक लाख श्लोक है । महाभारत महर्षि वेदव्यासजीने लिखा है । महाभारत का युद्ध 3067 ईसा पूर्व हुआ था । तब भगवान श्री कृष्ण की उम्र 55 या 56 वर्ष की थी । ऐसा भी माना जाता है कि कुरूक्षेत्र में जो महाभारत युद्ध हुआ था उसमें वर्षो पुरानी सभी की तप साधना है क्योंकि कुरूक्षेत्र की भूमि मोक्षदायिनी मानी गयी है । वहाँ लोग आकर रहने लगे थे । महाभारत का युद्ध 'अस्त्र' और 'शस्त्र' से हुआ था जो तपोबल से प्राप्त किये गये थे।

महाभारत वनपर्व के कैरातपर्व के अंतर्गत अध्याय ३८ में अर्जुन की उग्र तपस्या के बारे में बताया गया है कि जनमेजय करते है भगवान अनायास ही महान कर्म करने वाले कुन्तीनन्दन अर्जुन की यह कथा विस्तारपूर्वक सुनना चाहता हूँ । उन्होनें किस प्रकार अस्त्र प्राप्त किये ? पुरूष सिंह महाबाहुं तेजस्वी धनंजय उस निर्जन वन में निर्भय के समान कैसे चले गये थे ? बहमवेत्ताओं में श्रेष्ठ महर्षा उस वन में रहकर पार्थ ने क्या किया ? भगवान शंकर तथा इन्द्र को कैसे संतुष्ट किया ? प्रियवर में आपकी कृपा से यह सब बाते सुनना चाहता हूँ । सर्वज्ञ ! दिव्य और मानुष सभी वृतान्तो को जानते है । ब्रह्मन ! मैनें सुना है, कभी संग्राम में परास्त न होनेवाले योद्धाओ में श्रेष्ठ अर्जुन ने पूर्वकाल में जो भी कार्य किये है वो मुझे बताइये तब वैशम्पायनजी ने कहा तात।

पौरवश्रेष्ठ महात्माअर्जुन की यह कथा दिव्य है इसे मैं तुम्हे सुनाता हूँ । अनध देवदेव महादेवजी के साथ अर्जुन के शरीर का जो स्पर्श हुआ था उससे संबंध रखनेवाली यह कथा है । राजन् अमित पराक्रमी, महाबली, महाबाहु, कुरूकुलभूषण, इन्द्र पुत्र अर्जुन जो संपूर्ण विश्वमें विख्यात महारथी और सुस्थिर चित्तवाले थे । युधिष्ठिर की आज्ञा से देवराज इन्द्र तथा देवाधिदेव भगवान शंकर दर्शन करने के लिए कार्य की सिद्धि का उपदेश लेकर अपने उस दिव्य [गाण्डीव] धनुष और सोने की मुंडवाले खड्ग को हाथ में लिए हुए उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत की और चले ।

तपस्या के लिए दृढ निश्चय करके बडी उतावली के साथ जाते हुए वे अकेले ही एक भयंकर कटकाकीर्ण वनमें पहुँचे । जो नाना प्रकार के फल–फूलो से भरा था। अफाट प्रकृति की रहेमवर्षा जो हो रही थी अद्भूत नजारा था । प्रकृति ने भी उस पर अभी वर्षा की । पर्वतो से घिरि घाटियाँ को लाँघकर अर्जुन हिमालय के पृष्ठभाग में मदान पर्वत के निकट, निवास करते शोभा पाने लगे । वहाँ उन्होंने हिमालय के उस शिखर पर पवित्र, शीतल और निर्मल जल से भरी हुई उन सुंदर सरिताओं का दर्शन किया और प्रसन्न हुए । संपूर्ण दिशाओ घूमाच्छादित है देवेश्वर क्या करना चाहते है उसके बारें में कोई नही

जानता है । वे अपनी तपस्या संताप से हम सब महर्षियो को संतप्त कर रहे है, अत: आप उन्हे तपस्या में सद्वापूर्वक निवृत्त कीजिए।"

तब भगवान शंकर बोले महर्षियों तुम्हें अर्जुन के विषय में विषाद करने की कोई आवश्यकता नहीं है । तुम जैसे आये हो वैसे ही लौट जाओ । अर्जुन के मन में जो संकल्प है वह में भली भाँति जानता हूँ, उन्हे स्वर्ग लोक की कोई चिंता नहीं है । वह एश्वर्य और आयु भी नहीं चाहते, वे जो कुछ भी पाना चाहते है वह सब मैं आज ही पूर्ण करुँगा ।

वैशम्यानजी कहते है कि शंकर के यह वचन सुनते ही सत्यवादी महर्षि प्रसन्न चित अपने आश्रम मे लौट गए । उग्र तेजस्वी महामना अर्जुन वहाँ वन कर रमणीय प्रदेशों घूम–किरकर कठोर तपस्या में लग गये। मृगचर्म से विभूषित अर्जुन पृथ्वी पर गिर हुए सुखे पत्तो का ही भोजन के स्थान में उपयोग करते थे । एक भासनक वे तीन–तीन रात के बाद केवल फलाहार करते रहे । दूसरे मास को उन्होंने पहले की उपेक्षा दूने–दूने समय अर्थात् छ: छ: रात के बाद फलाहार करते व्यतीत किया । तीसरा महीना पँद्रह पँद्रह दिन में भोजन करके बिताया । चौथा महिना आने पर भरत श्रेष्ठ पाण्डुनंन्दन महाबाहु अर्जुन केवल वायु पीकर रहने लगे । वे दोनों भुजाएँ उपर उठाए बिना किसी सहारे के पैर के अंगूठे के अग्र भाग के बल पर खडे रहे । अमीत तेजस्वी महात्मा अर्जुन के सिर की जटाएँ नित्य स्नान करने के कारण विद्युत कमलो के समान हो गई थी । तदन्तर भयंकर तपस्या में लगे हुए अर्जुन के विषय में कुछ निवेदन करने की इच्छा से वहाँ रहनेवाले सभी महर्षि पिनाकधारी महादेवजी की सेवामें गये । उन्होंने महादेवजी को प्रणाम करके अर्जुन का वह तपरूप कर्म कह सुनाया । वे बोले, भगवन ! ये महातेजस्वी कुन्तीपुत्र अर्जुन हिमालय के पृष्ठ भाग में स्थिर हो अपार एवं उग्र तपस्या में संलग्न है और संपूर्ण दिशाओं को घूमाच्छादित कर रहे है । देवेश्वर वे क्या चाहते है ? इस विषय में से कोई कुछ नहीं जानता है । "वे अपनी तपस्या संताप से हम सब महर्षियों को संतईत कर रहे है । अत: आप उन्हें तपस्या से सद्भावपूर्वक निवृत कीजिये ।" पवित्र चित्तवाले उन महर्षियों का यह वचन सुनकर भूतनाथ भगवान शंकर इस प्रकार बोले ।

महादेवजी ने कहाँ, महर्षियों तुम्हे अर्जुन विषय में किसी प्रकार का विषाद करने की आवश्यकता नहीं है। तुरन्त आलस्य रहित हो शीध्र ही प्रसन्नतापूर्वक जैसे आये हो वैसे ही लौट जाओ । अर्जुन के मन में जो संकल्प है वह में भली भाँति जानता हूँ, उन्हे स्वर्ग लोक की कोई चिंता नहीं है । वह एश्वर्य और आयु भी नहीं चाहते, वे जो कुछ भी पाना चाहते है वह सब मैं आज ही पूर्ण करुँगा । वैशम्यानजी कहते है कि शंकर के यह वचन सुनते ही सत्यवादी महर्षि प्रसन्न चित अपने आश्रम मे लौट गए ।

इधर अर्जुन के पास दुयौधन द्वारा भेजा हुआ "मूक" नामक राक्षस सुकर का रूप धारण करके वृक्षो को उखाडता, पर्वतो को नुकसान पहुँचाता वहाँ पहुँचा । तब अर्जुन ने धनुष बाण उठा लिया । तब शिवजी अपने गणों के साथ भील का रूप धारण करके वहाँ पहुँच गये । जब सुकरने आक्रमण करने के लिए कदम बढाँए तो अर्जुन और भीलराजने एक साथ बाण छोडे । भीलराज का बाण सुकर को लगा और सुकर तत्काल मर गया ।
अर्जुन और अनुचर के बीच बाण को लेकर वाद–विवाद हुआ । परंतु अनुचर माना नहीं तो अर्जुनने युद्व के लिए उसे ललकारा कि मैं तुमसे नहीं तुम्हारे राजा से युद्व करूँगा । दोनों में घमासान युद्व हुआ ।

जिसमें किरात वेषधारी शिवजीने अर्जुन के कवच और बाणोंको नष्ट कर दिया । तब अर्जुनने शिवजी का ध्यान किया, तब शिवजी असली रूप में प्रकट हुए।

अर्जुन अपने सामने शिवजी को देखकर एकदम अवाक् हो गये । शिवजी को प्रणाम करते हुए स्तुति करने लगे । तब शिवजी प्रसन्न हुअे और अर्जुन को वर माँगने को कहते है। अर्जुन ने कहा, "नाथ मेरे उपर शत्रु का जो संकट मंडरा रहा था वह तो आपके दर्शन मात्र से ही दूर हो गया अतः जिससे मेरी डूहलोक की दरा सिद्वि हो, ऐसी कृपा करे।"

शिवजी ने मुस्कुराते हुए अपना अजेय पशुपत अस्त्र देते हुए कहा – "वत्स ! इस अस्त्र से तुम सदा अजेय रहोगे । जाओ विजय को प्राप्त करो ।" और फिर भगवान शिव अंतध्यान हो गए । अर्जुन प्रसन्न चित्त होकर अपने बंधुओ के पास पहुँच गये । संक्षेप में अगर कहना चाहूँ तो ये कथा ही ऐसी कथा है जो लगातार दो महिने तक चल सकती है जिसमें मात्र शस्त्र–शास्त्र ही नहीं लेकिन जीवन जीने की सच्ची रीत और पारिवारिक मूल्य का ज्ञान भरा हुआ है ।

संदर्भ सूचि

1. महाभारत वनपर्व– कैरातपर्व श्लोक – 38, पेज नं–11.
2. महाभारत कैरातपर्व श्लोक – 21, पेज नं–18.
3. महाभारत कैरातपर्व श्लोक – 21, पेज नं–17.